जय सनातन | राष्ट्रहित सर्वोपरि | जय भारत

विश्वजीत सिंह अनंत
राष्ट्रीय अध्यक्ष
राष्ट्रीय सनातन पार्टी
सपर्क सूत्र - 9412458954

RSP
राष्ट्रीय सनातन पार्टी

केन्द्रीय कार्यालय
म.नं 108, भूतल, खसरा न 60, 30 फूटा रोड, नया सभापुर
गुजरान, करावल नगर, दिल्ली- 110090
http://www.rashtriyasanatanparty.org
E-mail: rashtriyasanatanparty@gmail.com

पत्रांक 123

दिनांक 22/09/2023

सेवा में,

श्रीमान नरेन्द्र मोदी जी

प्रधानमंत्री, भारत सरकार

विषय : **भारत के संविधान का भारत के लोगों द्वारा भारत की मान्यताओं के आधार पर पुनर्लेखन कराने हेतु।**

महोदय,

विषयान्तर्गत सविनय निवेदन है कि विभिन्न सामाजिक प्रचार तंत्रों से ज्ञात हुआ है कि आपके नेतृत्व में भारत सरकार द्वारा भारत का नाम सभी भाषाओं में भारत किये जाने का प्रस्ताव है, ऐसा किया जाना ब्रिटिश कालीन पराधीनता के कलंक को हटाया जाना सिद्ध होगा, जिसके लिए राष्ट्रीय सनातन पार्टी आपको अग्रिम रूप से साधुवाद देती है। इसके साथ ही हम आपका ध्यान भारत में लागू इंडियन संविधान की ओर दिलाना चाहते हैं। भारत की संविधान सभा का गठन ब्रिटिश वायसराय ने किया था, और उन्होंने इंडिया के लिए किया था। संविधान सभा में ब्रिटिश सरकार के कुछ वेतनभोगी पूर्व कर्मचारी थे, कुछ उनके समर्थक/सहयोगी थे, जिन्होंने इंडिया एक्ट 1935 का 70% से अधिक भाग ज्यो का त्यों नकल किया। संविधान सभा ने प्रारम्भ में ही यह स्पष्ट कर दिया था कि यह संविधान भारत के लिए है, जिसे ब्रिटिश लोग इंडिया कहते हैं। **इंडिया दैट इज भारत** का कुल इतना अर्थ है कि इंग्लैंड के शासक अंग्रेज लोग यह जान लें कि यह संविधान इंडिया का है जो वस्तुतः भारत है। इंडिया का संविधान मत/मजहब/रिलिजन के आधार पर भारत के नागरिकों को अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक में बांटता है, जोकि सम+विधान के नाम को चरितार्थ नहीं करता। इंडिया के संविधान में अहिंदू मत/मजहब/रिलिजन को अल्पसंख्यक के नाम पर विशेष संरक्षण प्राप्त हैं, लेकिन भारत की आत्मा सनातन धर्म को संवैधानिक संरक्षण प्रदान नहीं किया गया है। संविधान की भेदभावपूर्ण व्यवस्था के चलते हिन्दू अपना धर्म बदलने को विवश हो रहे हैं। संविधान में उल्लेखित अल्पसंख्यक की अपरिभाषित अवधारणा के चलते सभी राजनीतिक पार्टियां साम्प्रदायिक आधार पर मुसलमानों, बौद्धों व ईसाईयों का तुष्टीकरण करने में लगी हुई है। जोकि राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिए खतरनाक हैं।

इंडियन संविधान की आड़ में आये दिन कई विषयों पर इंडियन शासकों, प्रशासकों व न्यायाधीशों के धार्मिक आधार पर बहुसंख्यक हिन्दू समाज की भावनायें आहत करने वाले निर्णय सामने आते रहते हैं। हिन्दुओं के मौलिक अधिकारों का दमन किया जा रहा है, हिन्दुओं के धर्म को अपमानित किया जा रहा है, हिन्दुओं की धार्मिक व सांस्कृतिक परम्पराओं पर कुठाराघात किया जा रहा है। यहां तक की देश की बेटी को भी मत/मजहब के आधार पर बांट दिया गया है, एक जैसी समान आर्थिक स्थिति वाले परिवार में आने वाली तथा साथ- साथ पढ़ने वाली आयशा और सावित्री में से एक सावित्री को केवल इस आधार पर कि वह बहुसंख्यक समुदाय से है, बेगम हजरत महल छात्रवृत्ति तथा शादी शगुन योजना का लाभ उठाने से रोक दिया जाता है।

हम भारत के नागरिक होने के नाते भारत में लागू इंडियन संविधान का सम्मान करते हैं, लेकिन साथ ही भारत सरकार से अनुरोध करते हैं कि भारत के संविधान का भारत के लोगों द्वारा भारत की मान्यताओं के आधार पर पुनर्लेखन कराया जाये। यदि भारत सरकार चाहे तो इस कार्य हेतु हम राष्ट्रहित में अपना योगदान देने को तैयार हैं, एक निश्चित समयावधि में भारत की मान्यताओं के आधार पर भारत के संविधान का पुनर्लेखन करके देने को तैयार हैं।

आशा है आप बहुसंख्यक समाज की जन भावनाओं का सम्मान करते हुये संविधान का पुनर्लेखन कराकर देश के नागरिकों को न्याय देंगे।

VISHWAJEET SINGH ANANT
PRESIDENT
RASHTRIYA SANATAN PARTY
H.NO. 108-A, G/F, KH. No. 60,
30 Foota Road, New Sabhapur Gujran,
Karawal Nagar, Delhi-110090

प्रार्थी

विश्वजीत सिंह अनंत
राष्ट्रीय अध्यक्ष
राष्ट्रीय सनातन पार्टी